तिरुमल तिरुपति देवस्थान

बालसप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका

अगस्त-2020

सप्तगिरि का परिशिष्ट

श्री वामनजयंती

२९-०८-२०२०

ब्रह्मोत्सवों में अन्नमय्या वेषधारी

ब्रह्मोत्सवों में बालिकाओं के द्वारा नाट्यविन्यास

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

बालसप्तगिरि

सप्तगिरि का परिशिष्ट

अगस्त-२०२०

वर्ष-०१
अंक-०६

विषयसूची

हिन्दू देवता	बाल कृष्ण लीलाएँ श्री ज्योतीन्द्र के. अजवालिया	04
पन्निद्दराल्वार	कुलशेखर आल्वार श्री कमल किशोर ही. तापडिया	06
कन्नड हरिदासवरेण्य	कनकदास की कृतियों में श्री वेंकटेश्वर की प्रशस्ति श्रीमती सी.मंजुला	08
चित्रकथा	कुमारधारा तीर्थ तेलुगु मूल - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु हिन्दी अनुवाद - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी चित्रकार - श्री के.तुलसीप्रसाद	10
बालनीति	अपनी प्रतिभा श्री सी.सुधाकर रेड्डी	14
विशिष्ट बालिका		16
'क्विज'	श्रीमती एन.मनोरमा	17
चित्रलेखन		18

मुखचित्र - भगवान वामन।
चौथा कवर पृष्ठ - बाल कृष्ण।

हिन्दू देवता

बाल कृष्ण लीलाएँ

- श्री ज्योतीन्द्र के. अजवालिया

श्रावण कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि, बुधवार और रोहिणी नक्षत्र था। ठीक आधी रात को कंस के कारावास में वसुदेव देवकी के सामने भगवान प्रकट हो गये। भगवान के चतुर्भुज रूप से चारों ओर दिव्य प्रकाश फैल गई, दोनों ने दिव्य स्तुति की। भगवान कृष्ण बाल स्वरूप में आ गये, भगवान की आज्ञा से वसुदेव ने बाल कृष्ण को गोकुल में श्री नंदलाल के घर पहुँचा दिया। देवकी की ये आठवी संतान मामा कंस की मृत्यु की कारण थी। यहाँ गोकुल में कृष्ण जन्माष्टमी का महोत्सव बड़ी धूमधाम से हो चुका था। योगमाया कि आकाशवाणी से कंस को अपनी मृत्यु नजर आ गई। कंस द्वारा नियुक्त पूतना राक्षसी कृष्ण को मारने के लिए गोकुल में आ पहुँची। उस दिन कृष्ण की छठी की उत्सव चल रही थी, पूतना अद्भुत सौंदर्य के साथ आई और बाल कृष्ण को दूध पिलाने लगी कुछ क्षण में पूतना का वध कर दिया।

सत्ताईस दिन के बाद जन्मनक्षत्र आया कृष्ण ने अपने आप करवट बदली। ठीक उसी समय माता ने भीडभाड से दूर बालक को पलने में सुलाया। कुछ देर बाद आंख खुली, कृष्ण दूध पीने के लिये रोने लगे। कोमल पैरों से शकट को जोर लगाया और मक्खन आदी बरतन तोड दिया। बाद में तृणावर्त कृष्ण को मारने के लिए आया बालक ने तृणावर्त का नाश कर दिया। ऐसे कई असुरों का संहार किया। एक दिन यशोदा पुत्र को गोद में लिये बैठी थी कृष्ण

को जम्हाई आ गई तो मुख में नक्षत्र, तारे, सूर्य-चंद्र देखे, तुरंत ही असल स्वरूप ले लिया।

बाद में नामकरण हुआ, घुटने चलने लगे। बालक ने माटी खा ली, तो यशोदा ने माटी उगाली तो कृष्ण के मुख में पूरा ब्रह्मांड देखा। बाद में कृष्ण ने अपने मित्रों के साथ मक्खन चोरी करके बहुत शरारत की। यशोदा श्याम को पकड कर उखल के पास ले आई और रस्सी से बांध ने लगी सब रस्सी कम पडने लगी। बाद में मोहन माता के प्यार में बंध गये। श्याम उखल से बंध कर नंदभुवन के द्वार पर आ गये उखल को आडा गिरा दिया और दो सटे हुये वृक्षों की बीच में से बाहर निकलने की कोशिश की तब ये लोकपाल कुबेर के दो पुत्र नलकूबर और मणिग्रीव दोनों नारद के शाप से पीडित थे, और यमलार्जुन झाड के रूप में बंधित थे। श्याम ने यहाँ उस दो भाई का उध्दार कर दिया।

एक दूसरा प्रसंग ऐसा है की एक फल बेच ने वाली नंदभुवन के पास आई। श्याम फल खरीद ने के लिये आगे चले। दोनों अंजली में धान लेकर फल वाली के पास गये। दोनों अंजली के बीच से धान सब गिर गया था। फल वाली ने बिना कुछ लिये फल से अंजली भर दी। लेकिन ये घर पहुँची, तो उसकी टोकरी अनमोल रत्नों से भरी हुई थी। बाद में वत्सासुर, बकासुर, व्योमासुर, अघासुर, धेनुकासुर राक्षसों का वध कर डाला। ऐसी तरह कई लीला करके किसी का उध्दार किया तो किसी को दर्शन भी दिया। धन्य श्रीकृष्ण की बाल लीला को।

जय श्रीकृष्ण!!

कुलशेखर आल्वार

- श्री कमल किशोर ही. तापडिया

केरल प्रांत के कुक्कुट पूरी नगर में राजा दृढवत नाम के राजा रहते थे। इनके कोई संतान नहीं थी। राजा दशरथ की तरह इन्होंने भी पुत्र प्राप्ति के लिए भगवान श्रीहरि की उपासना की। इनकी भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान ने कृपापूर्वक पुत्ररत्न प्रदान किया। जैसे दशरथ के घर में भगवान श्रीराम का अवतार हुआ था, वैसे ही राजा दृढवत के घर में कुंभमास के शुक्ल पक्ष में पुनर्वसु नक्षत्र युक्त दशमी तिथि को भगवान के कौस्तुभ मणि के अंशरूप महात्मा कुलशेखर का प्रादुर्भाव हुआ।

कुलशेखर राजा भगवान के परमभक्त, प्रजा के हित के लिए धर्मपूर्वक राज्य करने वाले राजा थे। भगवान श्रीराम ने जिस प्रकार पृथ्वी पर राज्य किया ठीक उसी प्रकार से कुलशेखर ने राज्य संपादन किया। उनके पिता राजा दृढवत महा तेजस्वी अपने पुत्र के अलौकिक प्रभाव को देखकर परम संतुष्ट हुए और समस्त शासन कार्य उनको सौंपकर तपश्चर्या के लिये वन में चले गये। राजा कुलशेखर भगवान श्रीराम की तरह नित्य ब्राह्मणों को एक हजार गायें दान के रूप में देते थे। स्वतंत्र दानशील शासक कुलशेखर धर्म, यश का सेवन करते हुए अपनी प्रजा का पुत्रवत पालन करते थे।

श्री विष्वक्सेनजी ने राजा कुलशेखर को पंचसंस्कार से दीक्षित किया और उन्हें समुचित उपदेश प्रदान किये। श्रीगुरुदेव के अनुग्रह से राजा और भी धर्मपरायण और ज्ञान संपन्न हो गये। उनकी बुद्धि लोगों को संसार सागर से पार उतरनेवाली दिव्यता से परिपूर्ण हो गयी। भगवान श्रीमन्नारायण के अर्चावतार श्री वेंकटेश जी तथा भगवान श्रीराम के प्रति कुलशेखर स्वामी की परम भक्ति थी। श्री वेंकटेश भगवान से सेवापूर्वक प्रार्थना की कि- ''हे नाथ! आपके मंदिर में मैं सीढ़ी बनकर रहूँ। जिससे आपके दिव्य मुखारविन्द का नित्य दर्शन कर सकूँ। आपके दर्शन करने आने वाले भक्तों की चरणरज मेरे मस्तिष्क पर सदा लगती रहे।'' और साथ-साथ भगवान श्रीरंगनाथ के नित्य निवास श्रीरंगम क्षेत्र की महिमा को सुनकर कुलशेखर स्वामी ने श्रीरंगधाम की यात्रा करके वहीं वास करने का निश्चय किया। इस समाचार को सुनकर मंत्रीगण बहुत दुःखी हुए। उनकी इस यात्रा को रोकने के लिए

श्रीवैष्णव भागवतों से विनंती की। राजा कुलशेखर को श्रीवैष्णव सेवा और उनके सत्संग के प्रति बहुत ही लगाव था। जब भी वे श्रीरंगम जाने की तैयारी करते श्रीवैष्णव भागवत मंडली पहुँच कर उनकी यात्रा को रोक देते थे। सब जानते थे कि ऐसे धर्मपरायण राजा के यहाँ निवास करने से ही सब लोगों का कल्याण है। राजा ने सोचा कि श्रीवैष्णव भागवतों की सेवा करना ही सबसे बड़ा पुरुषार्थ है। भागवत सेवा का माहात्म्य जाननेवाले राजा कुलशेखर ने अपनी श्रीरंगम यात्रा का विचार-स्थगित कर दिया। समस्त वैष्णवों के साथ भजन-सत्संग करते हुए राजप्रासाद में रहने लगे। एक समय में धर्मात्मा राजा कुलशेखर ने श्रीवैष्णवों के मुख से श्रीवेंकटाचल माहात्म्य सुनकर उनकी भक्ति में डूबकर लोककल्याणार्थ 'मुकुंदमाला स्तोत्र' की दिव्य रचना की। यह स्तोत्र भगवान की प्रपत्ति की दिव्य प्रस्तुति है, जिस का अनुसंधान कर आज भी अनेक भागवत लाभ उठा रहे हैं। प्रतिदिन रामायण की कथा का श्रवण करने में अपना समय यापन करने लगे। श्रीराम चरित्र में लीन कुलशेखर को भगवान प्रसन्न होकर साक्षात दर्शन प्रदान किये। राजा की भक्ति और भी प्रगाढ़ हो गयी।

राजा कुलशेखर राजपाट त्याग कर श्रीवैष्णव भागवतों के साथ श्रीरंगम आ गये। श्री कुलशेखर स्वामी ने द्राविड़ भाषा में दिव्यप्रबन्ध की रचना की। १०५ पाशुर के इस प्रबंध में ८ दिव्यदेशों का मंगलाशासन किया गया है। 'पेरुमाल तिरुमोलि' इस प्रबंध का नाम है। श्रीरंगम में कुछ समय निवास करके स्वामी समस्त श्रीवैष्णव मंडली के साथ दक्षिण के अनेकों दिव्यदेशों की यात्रा और वहाँ स्थित भगवान की सेवा करने के बाद कुरुकानगर में पधारे। यहाँ के भगवान श्री राजगोपाल की सेवा में लगभग ६७ वर्ष तक रहे। पांड्यदेश स्थित इस ब्रह्मपुर नामक स्थान पर ही उन्होंने श्री राजगोपाल भगवान की सन्निधि में परमपद की प्राप्ति की।

विख्यात राजर्षि कुल में अवतरित होकर भगवत भागवत वैभव का विस्तार करते हुए महात्मा कुलशेखर स्वामी ने भगवान के नित्य धाम वैकुंठलोक को प्राप्त किया।

शिक्षा - हमें राजा कुलशेखर की तरह धर्म परायण, दानशील, दयावान, सेवा परायण और भगवान का भक्त बनकर रहना चाहिए। जीवन में प्राणिमात्र के प्रति नम्रता भाव रखना चाहिए। मनुष्य जीवन का एकमात्र लक्ष्य संसार की सेवा करते हुए भगवत्प्राप्ति करना है।

जय श्रीमन्नारायण!!

कन्नड
हरिदासवरेण्य

कनकदास महान संत कवि, दार्शनिक, संगीतकार तथा वैष्णव मत के प्रचारक थे। उनकी गणना आचार्य माधव के अनुयायियों में होती है जिनमें मुख्य नाम नरहरितीर्थ, श्रीपादतीर्थ, वादिराज, पुरन्दरदास, राघवेन्द्र तीर्थ, विजयदास, गोपाल दास, कनकदास आदि हैं। ये सभी संत परम ज्ञानी थे।

कनकदास का जन्म कर्नाटक में धारवाड़ जिले के बंकापुर गाँव में बीर गौडा और बचम्मा के गडरिया परिवार में हुआ था।

बच्चों! कनकदास की कृतियों में श्री वेंकटेश्वर की प्रशस्ति के बारे में विशेष कीर्तन सुने होंगे। संत कवियों के बारे में जानकारी प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक है। ''कागिनेले यादिकेशव'' को समर्पित कई कीर्तन 'मोहन तरंगिनी', 'नल चरित्र', 'हरिभक्त सार' नाम के ग्रंथों की रचना किए हुए कनकदास जी व्यासराय जी की दिव्य विद्याओं से हरिदास श्रेष्ठ हो गए। आप्त वाक्य प्रमाण की वजह से यमांश संभूत मालूम होता है। (ता जंबारिये कनकनु-मध्वपति विट्ठलदास) इनके कीर्तनों को 'मंडिगेगलु' कहा जाता है।

'नम्मम्म शारदे उमामहेश्वरी', 'इष्टुदिन ई वैकुंठ एष्टु दूरवो', 'एसु कायंगल नलिदु एंभत्तु नाल्लु लक्ष जीवराशियन्नु', 'मुट्टभेडमुट्टबेड', 'परम पुरुष नी नेल्लिकायि', 'भजसिबदुकेलो मानव', 'वल्लणि सदिरुकांह्य तालुमनलै' - आदि कनकदास जी के प्रसिद्ध कृतिया हैं। किंवदती थी कि - श्रीनिवास ने कनकदास जी को अपने ब्रह्मोत्सव में भाग लेने के लिए (आने के लिए) स्वप्न में दिखाकर आमंत्रित किया था। श्रीनिवास भगवान के सुझाव पर कनकदास जी को सम्मान के साथ आह्वान करने के लिए उस समय के (महंत) देवस्थान के अधिकारियों ने पहाड उतरकर सामने आने पर, उसे न पहचान कर पूछने पर उन्होंने ऐसा कहा था- 'सामने जानेवालों के पीछे, पीछे आनेवालों के पहले।'

कनकदास की कृतियों में श्री वेंकटेश्वर की प्रशस्ति

तेलुगु मूल - श्री एस.नागराजाचार्युलु
हिन्दी अनुवाद - श्रीमती सी.मंजुला

निराडंबर, नम्र, उदार मन वाले इन्होंने भगवान श्रीनिवास को याद करते हुए पहाड़ पर आकर ठंड से ठिठरते हुए, भूख से तडपते हुए, अंधेरे में सोए हुए समय में, उस तमस में एक आजानुबाहु ने खाने के लिए प्रसाद, पहनने के लिए एक लेस के कपड़े को देकर चला गया था। एक और किंवदती थी कि - उडिपि कृष्ण ने कनकदास जी की भक्ति के लिए सराहना करते हुए पश्चिमाभिमुख हो गए। इस महान व्यक्ति द्वारा श्री वेंकटेश्वर के लिए गाया गया लोरी बहुत प्रसिद्ध है। इस गीत को मंदिरों में ज्यादतर रात्रि के समय एकांत सेवा के दौरान गाया जाता है। लोरी की पल्लवि निम्न प्रकार है-

''लालि पावन चरण लालि अघहरण। लालि वेंकट रमणललित कल्याण।।
नरमृगाकारि हिरण्य कनवैरि। कठिराज रक्षक कारुण्यमूर्ति।।
हरि आदि केशव गुरु अप्रमेय। सिरिधर शेषगिरि वर तिम्मराय।।

कनकदास जी के द्वारा लिखी गई रचनाओं में व्यंजनिंदास्तुति से संबंधित 'बंदेवय्य गोविंद शेट्टि' नाम के गीत भी लोकप्रिय है। ''एनेंदु कोंडाडि स्तुति सलोदेव'' नाम के कीर्तन में ''तिरुपतियवास श्रीवेंकटेशनु नीनु समरिसि निन्नयनाम बदुकुवनुनानु। बिरुदुल्लवनु निनु मोरे होक्कवनुनानु सिरियादि केशवने नीनु।'' इस कीर्तन का भाव इस प्रकार है- 'आपकी क्या प्रशंसा करे? तिरुपति के निवासी श्री वेंकटेश आप हैं, मैं आप को याद करके जीवन बितानेवाला हूँ।' 'मुट्टबेड' नाम के कीर्तन में- 'सिरि राम मंत्र सदा जपि सुत मोददलि, तिरुपति यात्रेय माडुब महोत्सरमुट्टबेड' - इस कीर्तन में उन्होंने ऐसा कहा था कि- राम मंत्र जप, तिरुपति की यात्रा करनेवालों को यमराज ने न छूने की आज्ञा दी। 'हरि निम्न पदकमल, करुणादिंदलि एनगे।' - इस कीर्तन का भाव इस प्रकार है- 'हे हरि! तुम्हारे चरण कमल के समान है। इन की दया से ही मुझे तेरी सेवा करने का अवसर मिला है। समस्त गुरु मंत्रों का तू ही मूल है। तू ही सद्गुरु की साक्षात मूर्ति है। तू ने मुझे अपने पास बुला लिया है। हे भगवान! तुम्हारी जय हो।'

कनकदास जी में त्याग, ईश्वर भक्ति, काव्य रचना, दैन्य, बंधुत्व और सम दृष्टि आदि भावनाएँ विद्यामान थीं। उन्होंने केशव, नारायण, माधव, गोविन्द, विष्णु, मधुसूधन, त्रिविक्रम, वामन, श्रीधर, हृर्षिकेश, पद्मनाभ, दामोदर, संकर्षण, वासुदेव आदि अभिसाधनों के आधार पर पच्चीस पदों की रचना की। ऐसे संत को हम भूल नहीं सकते।

चित्रकथा

कुमारधारा तीर्थ

तेलुगु मूल - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
हिन्दी अनुवाद - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी
चित्रकार - श्री के.तुलसीप्रसाद

१) श्रीवेंकटाचल पर आश्रम बनाकर, उसमें एक अंधावृद्ध ब्राह्मण रहता है। एक दिन, वह अपने पुत्र कौण्डिन्य के साथ घूमने बाहर निकलता है तथा आश्रम से बहुत दूर निकल जाता है।

२) पिताजी! आप बहुत थक गए हैं। इस पेड के नीचे थोडी देर के लिए विश्राम कीजिए। मैं अभी जरा वहाँ तक हो आता हूँ।

३) ठीक है वत्स! जल्दी लौटो।

४) थोडी देर के बाद वह वृद्ध ब्राह्मण जोर से चिल्लाता है।

५) हे पुत्र! कौण्डिन्य! कहाँ चला गया तू? जरा जल्दी लौटो बेटा! मेरे लाल जरा जल्दी...

६) चिल्लाते हुए ये वृद्ध ब्राह्मण के पास भगवान जी ने पधारे।

७) दादाजी! आप किसको ढूँढ़ रहे हो? इस पेड के इर्द-गिर्द कोई भी नहीं है।

८) अरे कोई नहीं है क्या? हे वत्स! आप कौन हो?

९) दादाजी! आपको तथा मुझे छोड़कर यहाँ कोई तीसरा व्यक्ति नहीं है।

१०) मैं अपने पुत्र को पुकार रहा हूँ! हे भगवान अब मेरा क्या होगा?

११) जिसका कोई नहीं होता, उसका आश्रय केवल भगवान ही होता है।

१२) दादाजी! आप वृद्ध हो, कैलाश यात्रा करने योग्य हो, इस अवस्था में तुम्हारा यह पुत्र मोह कैसा? मुक्ति पाने के लिए तरसो...

१३) मुझे मुक्ति नहीं चाहिए, मेरी एक इच्छा की पूर्ति करोगे क्या? मैं तुम्हें भगवान मान रहा हूँ!

१४) दद्दू! सभी प्राणी मुक्ति पाना चाहते हैं, तुम उसे नकार क्यों रहे हो?

१५) मैंने अपने जीवन पर्यंत कोई दैव या पितृ कार्य नहीं किया, अब मुझे अवसर मिला। मुझे उन्हें करने दो।

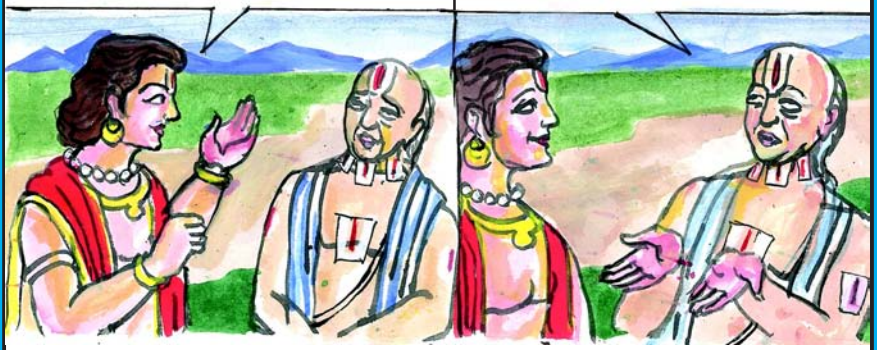

१६) तो मेरी बात मानकर चलो दादाजी।

१७) ठीक है स्वामी!

१९) दादाजी! इस धारा के नीचे स्नान करो।

१८) आगंतुक, उस वृद्ध ब्राह्मण को धीरे-धीरे एक जलधारा के पास ले जाता है।

२०) करुँगा स्वामी!

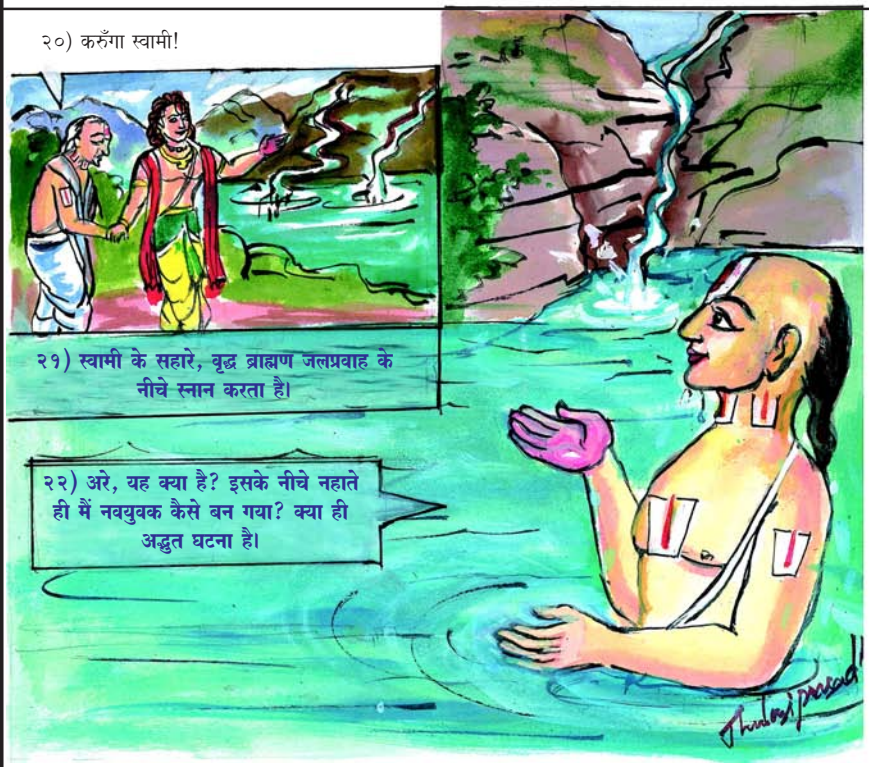

२१) स्वामी के सहारे, वृद्ध ब्राह्मण जलप्रवाह के नीचे स्नान करता है।

२२) अरे, यह क्या है? इसके नीचे नहाते ही मैं नवयुवक कैसे बन गया? क्या ही अद्भुत घटना है।

२३) जो आगंतुक वृद्ध का मार्गनिर्देशन किया, वह नवमोहनाकार श्री वेंकटेश्वर स्वामी के रूप में दर्शन प्रदान किया।

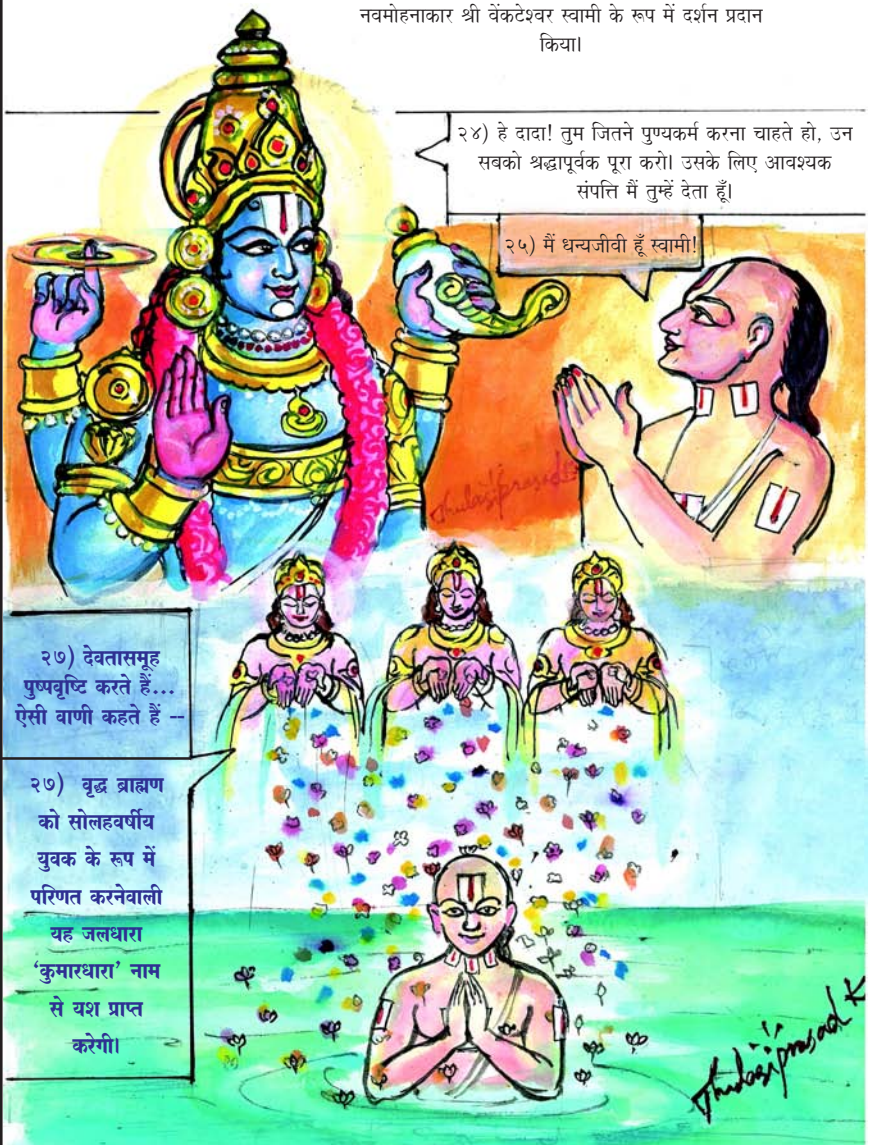

२८) अगले महीने में... हम श्री वेंकटेश्वर की एक अन्य दिव्य लीला का दर्शन करेंगे। स्वस्ति।

बालनीति

अपनी प्रतिभा

- श्री सी.सुधाकर रेड्डी

नरसिंगापुर गाँव के राममोहन ने गुरुकुल जाकर अपनी शिक्षा पूरी की, बाद में अपना गाँव वापस लौटा। राममोहन को राजा के दरबार में नौकरी करने की इच्छा हुई। राममोहन के पिता गोपाल को भी यही कामना थी कि- राजा के दरबार की नौकरी में अपने बेटे की नियुक्ति होने से भलाई होगी। उसी समय में उनके विचारानुसार उस राज्य के राजा को अपने राज्य में कुछ नौकरियों को भर्ती करने का संकल्प करके उसकी जिम्मेदारी अत्यंत सक्षम, श्रेष्ठ राजद्योग हेमनाथ को सौंप दिया।

राममोहन के मामा शिवराम राजधानी में एक प्रमुख व्यापारी थे। उनको हेमनाथ से अच्छा परिचय का विषय जानकर एक दिन राममोहन राजधानी की ओर यात्रा करके अपने मामा के घर पहुँचा। बहुत दिनों के बाद अपना घर आया हुआ अपने दामाद राममोहन को शिवराम ने आदरपूर्वक आह्वान किया और पूछताछ की। बातों के संदर्भ में उसने अपने मन की बात बताई। दरबार में नौकरी के लिए अपने को हेमनाथ से सिफारिश करने के लिए कहा। दामाद की सहायता करने हेतु शिवराम ने राममोहन को अपने साथ लेकर हेमनाथ के निवास पहुँचा। उसको हेमनाथ से परिचय करते हुए कहा कि- ''मेरा दामाद सिलसिले में गुरुकुल में विद्याभ्यास पूरा करके आया था। बहुत होशियार है। उनको दरबार में नौकरी करने की चाह है। आप जरूरी उनकी सहायता करनी है।'' हेमनाथ धीरे से हँसकर बोला कि वैसे ही देखेंगे। ''उसके बाद शिवराम ने कहा था कि देखा मैंने तुम्हारे बारे में हेमनाथ से सिफारिश की। अब तुम शांत से रहे।'' घर लौटने के बाद शिवराम ने राममोहन से कहा कि- ''अब नौकरी तुम्हारे लिए स्थायी हो।'' राममोहन संतुष्ट हो गया और अपने गाँव लौट आया।

लेकिन एक हफ्ता बीत गया और उन्हें अपनी नौकरी के बारे में कोई खबर नहीं मिली। इसलिए राममोहन निराश होकर कुछ देर सोचा, उसके बाद अपने मित्र परमेश्वर के पास गया। परमेश्वर के ताऊ वीरसेन राजा की सेना में एक सेनापति के रूप में सेवारत है। उसने परमेश्वर को पूरी बात बताई और कहा कि वह उसे दरबार में नौकरी दिलाने में मदद करे। परमेश्वर उसके लिए हाँ कहकर राममोहन को साथ में लेकर अपने ताऊ के घर गया। शिवराम ने

राममोहन की नौकरी के लिए जिस प्रकार सिफारिश की, उसी प्रकार वीरसेन ने भी की। हेमनाथ पहले की तरह इस बार भी हाँ बोला। राममोहन, जो एक हफ्ते से इतंजार करने पर भी नौकरी की प्राप्ति के संबंध में किसी भी खबर न मिलने पर निराश हो गया।

गोपाल ने निराशा में डूबे हुए बेटे को देखा और सलाह दी। ''राममोहन! अब तुम नौकरी के लिए सिफारिश के अलावा खुद हेमनाथ से मिलकर अपनी प्रतिभा को साबित करें। तुम को नौकरी अवश्य मिलेगी।'' अपने पिता की बात सुनने के बाद, राममोहन अगले दिन राजधानी जाने के लिए रवाना हुआ और बिना किसी और से न मिलकर सीधा जाकर हेमनाथ से मिला। उनसे अपना परिचय बताते हुए कहा कि- नमस्ते जी! मेरा नाम राममोहन है। वारणासी के गुरुकुल में रहकर अपनी शिक्षा पूरी करके आया हूँ। अपनी प्रतिभा के लिए परीक्षण करके दरबार में उपयुक्त नौकरी में शामिल होना चाहता हूँ। हेमनाथ इस बार हमेशा की तरह ''हाँ, वैसे ही देखता हूँ।'' ऐसा न कहकर, राममोहन से कुछ सवाल पूछकर, उसकी पढ़ाई का विवरण जानकर अत्यधिक प्रसन्न हुआ।

उसके बाद राममोहन को नौकरी में शामिल होने के लिए आदेश देते हुए एक पत्र लिखकर दिया। उसे देखकर राममोहन पहले प्रसन्न हुआ बाद में आश्चर्यचकित भी हुआ।

राममोहन के मुख की भावना को पढ़कर हेमनाथ ने इस प्रकार कहा- मुझे तुम्हारा शक समझ में आ रहा है। आपको अपनी प्रतिभा पर, विद्या पर भरोसा न होकर प्रमुख व्यक्तियों से सिफरिश के साथ मेरे पास आया था। केवल सिफारिस के आधार पर आया हुआ तुम को नौकरी देने का मन मुझे नहीं लगा। लेकिन आज तुम अपनी प्रतिभा को साबित करके, परीक्षा की तैयारी होने पर आपके आत्मसम्मान में वृद्धि होने का महसूस कर मैंने आप को नौकरी देने का फैसला किया है। अब से आपको यह जानने की जरूरत है कि व्यावहारिकता की सिफारिश के बजाय अपनी प्रतिभा पर भरोसा रखना चाहिए। हेमनाथ के शब्दों के अर्थ को राममोहन समझा, उन्हें दिल से धन्यवाद दिया और साथ ही चलने का वादा किया।

नीति : नौकरी की प्राप्ति के लिए अपनी प्रतिभा पर आधारित होना है, दूसरों की सिफारिश पर नहीं।

विशिष्ट बालिका

नाम - ए.चार्मिता सिंहा

कक्षा - छठवी कक्षा

जन्म - १७-०१-२०१०

माताजी का नाम - श्रीमती ए.सीतालक्ष्मी, सहायक कार्यनिर्वहणाधिकारिणि, ति.ति.दे., तिरुपति।

पिताजी का नाम - श्री ए.नरसिंहबाबु, कनिष्ठ लेखा अधिकारी, ए.पी.एस.पी.डी.सी.एल., पुत्तूर।

पाठशाला - सिल्वर ओक्स दि स्कूल, भवानीनगर, तिरुपति।

उपलब्धि - बालिका प्रतिभा (भरतनाट्यम्)

१. छठवी कक्षा में रहते हुए शिक्षा संबंध विषय में पाठशाला में प्रथम स्थान।

२. प्राथमिक कक्षाओं के लिए हेड गर्ल।

३. उन्होंने 'भरतनाट्यम्' की तकनीकों को अपनी गुरुआनी केशवी बागेदल्लि (वासवीकलाकेन्द्र) से सीखी और 'भरतनाट्यम्' में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

४. अपने 'भरतनाट्य' कौशल के साथ एक प्रतिभा संपन्न बालिका के रूप में उत्कृष्ट प्रदर्शन।

५. अब तक वह 'भरतनाट्यम्' में प्रदर्शन कर चुकी है और तीन बार गिनीज बुक ऑफ रिकार्ड में (वर्ष २०१८, २०१९ में हैदराबाद, चेन्नई एवं बेंगलूरु के नाट्य कार्यक्रमों में) सूचीबद्ध हैं।

६. पुरस्कार - १. २०१९ - 'भारतीय नाट्यकलाभिनेत्रि' - श्री ललिताकलानृत्य निकेतन, राजमहेन्द्रवरम्।

२. २०१९ - 'नाट्यसंकल्प पुरस्कार', श्रीगणपति नृत्योत्सवम्, काणिपाकम्।

३. २०१९ - डैनमिक टालैंट अवार्ड (गतिशील प्रतिभा पुरस्कार) शिल्पाराममु, तिरुपति।

४. २०२० - 'नाट्यश्री' अवार्ड, शिखरम आर्ट थिएटर्स, हैदराबाद।

'क्विज'

आयोजक - श्रीमती एन.मनोरमा

१) रुक्मिणी देवी के पिताजी का नाम क्या है?

अ) भीष्म　　आ) भीष्मक

इ) भीम　　ई) कोई नही

२) शिवजी का वाहन क्या है?

अ) नंदी　　आ) नकुल

इ) नाग　　ई) नंद

३) भीमसेन और हिडिंबा का पुत्र का नाम क्या है?

अ) घृताची　　आ) घंटाकर्ण

इ) घटोत्कच　　ई) कोई नही

४) स्वायंभुव मनु तथा उनकी पत्नी शतरूपा के दो पुत्र हुए - उत्तानपाद और ------

अ) पुलस्त्य　　आ) प्रसेन

इ) प्रियव्रत　　ई) पुरूरवा

५) शिवजी के धनुष का नाम क्या है?

अ) पिनाक　　आ) घांडीव

इ) शारंग　　ई) कोई नही

६) मत्स्यदेश के राजा विराट के साले का नाम क्या है?

अ) जयध्वज　　आ) कीचक

इ) जरासंध　　ई) जटायु

७) गणों के अधिपति कौन है?

अ) कुमारस्वामी　　आ) अय्यप्पस्वामी

इ) गणपति　　ई) नंदी

जवाब - १) आ　२) अ　३) इ　४) इ　५) अ　६) आ　७) इ

चित्रलेखन

इस चित्र को रंगों से अब भरें क्या?

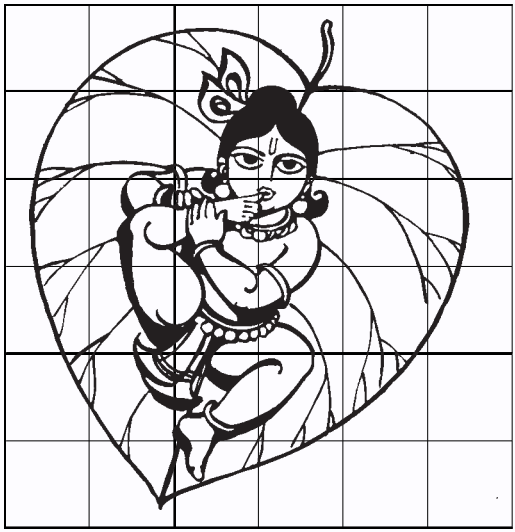

ऊपर सूचित चित्र को नीचे के डिब्बों में खींचिये -

ब्रह्मोत्सवों में बच्चों द्वारा लोक नृत्य

ब्रह्मोत्सवों में बालिकाओं का दांडिया नृत्य

SAPTHAGIRI (HINDI) ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams printing on 30-08-2020. Regd. with the Registrar of Newspapers under "RNI" No.10742,
Postal Regd.No.TRP/11 - 2018-2020
Licensed to post without prepayment No.PMGK/RNP/WPP-04/2018-2020

नन्हा शिशु नन्हा शिशु
कभी नहीं देखा है ऐसा यह शिशु!!

- अन्नमय्या

गोकुलाष्टमी
१२-०८-२०२०